रजिस्ट्री सं० डी० एल०-33004/99 REGD. NO. D. L.-33004/99

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 290] नई दिल्ली, मंगलवार, अगस्त 21, 2018/श्रावण 30, 1940
No. 290] NEW DELHI, TUESDAY, AUGUST 21, 2018/SHRAVANA 30, 1940

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 अगस्त, 2018

निधन–सूचना

सं. 3/3/2018-पब्लिक.—भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं जननायक राजनेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी का दिनांक 16 अगस्त, 2018 को नई दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में सायं 05 बजकर 05 मिनट पर देहावसान हो गया। 93-वर्षीय परिपक्व राजनेता, विद्वान, लोकप्रिय साहित्यकार, ओजस्वी वक्ता और सार्वजनिक जीवन में प्रतिष्ठित एवं संवेदनशील विराटपुरुष के निधन से राष्ट्र को अविस्मरणीय एवं अपूरणीय क्षति हुई है।

2. श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसम्बर, 1924 को ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ था। उन्होंने अपनी शिक्षा ग्वालियर और कानपुर से पूरी की थी और तत्पश्चात् वे पत्रकारिता के क्षेत्र से जुड़े रहे। उन्होंने 'राष्ट्रधर्म', 'पाञ्चजन्य' और 'वीर अर्जुन', समाचार पत्रों का सम्पादन भी किया। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया और वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जेल भी गये। वे जनसंघ के प्रमुख सदस्य और भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य थे तथा इन दोनों संगठनों के संस्थापक अध्यक्ष बने। वे दस बार लोक सभा और दो बार राज्य सभा के लिए निर्वाचित हुए। वे वर्ष 1975 से 1977 के दौरान आपातकाल के खिलाफ चलाए गए आंदोलन की अगुवाई करने वाले प्रमुख नेताओं में से एक थे। उन्होंने वर्ष 1996 से 2004 तक तीन बार भारत के प्रधानमंत्री के पद को सुशोभित किया और अपनी अनूठी कार्यशैली से इसे गौरवान्वित किया।

3. प्रधानमंत्री के रुप में, श्री वाजपेयी ने देश में स्थिर और तीव्र आर्थिक विकास की बुनियाद रखी। उनके कुशल नेतृत्व में विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक सुधारों की शुरुआत हुई, जिनके फलस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था प्रगति के पथ पर अग्रसर हुई। उन्होंने ग्रामीण सड़कों, राजमार्गों, हवाईमार्गों, दूरसंचार, ऊर्जा और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास को गति प्रदान करते हुए 'सम्पर्कता क्रांति' का सूत्रपात किया।

4. उनके नेतृत्व में किए गए सफल परमाणु परीक्षणों से विश्व के समक्ष भारत की प्रौद्योगिकी सामर्थ्य एवं ताकत उजागर हुई और देश को वह सम्मान और पहचान प्राप्त हुई, जिसका वह सही मायनों में हकदार था। वे भारत के हितों से कोई समझौता किए बगैर, पड़ोसी देशों के साथ शांति और मित्रतापूर्ण संबंध कायम करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। उन्होंने शांति के लिए लाहौर यात्रा और आगरा शिखर सम्मलेन जैसी कई अभूतपूर्व पहलें कीं। परन्तु इसके साथ ही, राष्ट्रीय हित में आवश्यक होने पर, उन्होंने कारगिल युद्ध जैसी आक्रामक षड़यंत्रपूर्ण कार्रवाइयों को निर्णायक रूप से विफल कर दिया ।

5. इससे पहले, भारत के विदेश मंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, श्री वाजपेयी ने राष्ट्रीय हितों को आगे बढ़ाने के लिए भारतीय राजनय नीति (डिप्लोमेसी) को नई दिशा प्रदान करने में अतुलनीय योगदान दिया है। विश्वशांति और विश्ववंधुत्व के दर्शन से ओतप्रोत भारत के सदियों पुराने मूल्यों का अनुसरण करते हुए, उन्होंने वैश्विक स्तर पर देश की प्रतिष्ठा और स्थिति को नई ऊंचाईयों एवं बुलंदियों तक पहुंचाया। संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में भाषण देने वाले पहले भारतीय नेता के रूप में उन्होंने हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मुखरित किया।

6. स्वतंत्रता के बाद से देश के सर्वाधिक प्रतिष्ठित संसद सदस्य के रूप में, श्री वाजपेयी ने अपनी वाकपटुता, तर्क और विवेकपूर्ण प्रतिभा से संसदीय परिचर्चा को समृद्ध बनाया। सुन्दर और सटीक मुहावरों, अभिव्यक्ति की गरिमा और अंतःप्रेरित काव्यात्मकता से ओतप्रोत उनकी ओजस्वी वाणी से, उन्हें आधुनिक भारत के सर्वप्रिय और सम्मोहक वक्ताओं की पंक्ति में स्थान मिला। विपक्ष में रहते हुए भी, वे सरकार के राष्ट्रीय कल्याणोन्मुखी प्रयासों की सराहना करने से कभी नहीं चूकते थे।

7. पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भविष्यवाणी करते हुए उन्हें भारत का भविष्य बताया था। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बहुत पहले उनकी प्रखर प्रतिभा की पहचान करते हुए यह भविष्यवाणी की थी कि वे एक दिन राष्ट्र का नेतृत्व करेंगे। डॉ. राममनोहर लोहिया ने हिंदी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की सराहना की थी। पूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर ने संसद में उन्हें 'गुरुदेव' कहकर सम्मानित किया था। वर्ष 2015 में कृतज्ञ राष्ट्र ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया।

8. श्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन से, राष्ट्र ने कद्दावर राजनेता, जनप्रिय नेता, कुशल प्रशासक और एक दूरदृष्टा व्यक्तित्व को खो दिया है। उनकी यह विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अपूर्व एवं शाश्वत स्रोत बनी रहेगी।

राजीव गौबा, गृह सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 21st August, 2018

OBITUARY

No. 3/3/2018-Public.—Shri Atal Bihari Vajpayee, former Prime Minister of India, passed away on the 16th August 2018 at 5.05 PM at the All India Institute of Medical Sciences, New Delhi. The passing away of the 93-year-old statesman, scholar, litterateur, orator and doyen of Indian public life has left a huge void for the nation.

2. Born on the 25th December 1924 in Gwalior, Madhya Pradesh, Shri Atal Bihari Vajpayee received his education in Gwalior and Kanpur and commenced his career in journalism. He edited 'Rashtradharma', 'Panchajanya' and 'Veer Arjun' newspapers. He participated in the freedom movement and was imprisoned in 1942 during the Quit India Movement. He was a prominent member of the Jansangh as well as founding member of the Bhartiya Janata Party and served as their President. He was elected ten times to the Lok Sabha and twice to the Rajya Sabha. He was one of the prominent leaders of the movement against the Emergency during 1975 to 1977. He served as the Prime Minister of India thrice during the period 1996 to 2004.

3. As Prime Minister, Shri Vajpayee laid the foundation for sustained and rapid economic development in the country. Under his stewardship, reforms were initiated on various fronts which propelled the economy onto a high growth path. He galvanised a 'Connectivity Revolution' encompassing rural roads, highways, airways, telecom, energy and information technology.

4. Successful nuclear tests under his leadership demonstrated to the world India's technological prowess, that earned the country the respect and recognition it rightfully deserved. He continuously strove to maintain peaceful and friendly relations with neighbouring countries without losing sight of India's interests. He took several path-breaking initiatives for peace such as his Lahore visit and the Agra Summit. At the same time, when national interest so required, he decisively thwarted aggressive designs of adversaries, such as during the Kargil war.

5. Previously, as Minister of External Affairs, Shri Vajpayee broke new ground in shaping Indian diplomacy in furtherance of national interests. Pursuing India's age-old ethos of universal peace and brotherhood, he raised the country's profile and stature to new heights on the global stage. He was also the first Indian leader to speak in Hindi at the United Nations General Assembly.

6. As one of the most accomplished Parliamentarians of the country since Independence, Shri Vajpayee enriched parliamentary debates with wit, reason and wisdom. The power of his voice coupled with the elegance of his phrases, dignity of his expression and poetic flair of his words made him one of the most charming and eloquent communicators of modern India. Even while he was in the opposition, he never failed to appreciate national welfare oriented efforts of the Government.

7. Pandit Deen Dayal Upadhayay prophetically hailed him as India's future. Pandit Jawaharlal Nehru recognised his talent early on and predicted that he would lead the nation one day. Dr Ram Manohar Lohia acclaimed his commitment towards Hindi. Shri Chandra Shekhar, former Prime Minister addressed him as 'Gurudev' in Parliament. In 2015, a grateful nation conferred on him the Bharat Ratna, India's highest civilian award.

8. In the demise of Shri Atal Bihari Vajpayee, the country has lost one of its tallest statesmen, an endearing leader of the masses, an able administrator and a visionary. His legacy will be an abundant source of inspiration for generations to come.

RAJIV GAUBA, Home Secy.

Uploaded by Dte. of Printing at Government of India Press, Ring Road, Mayapuri, New Delhi-110064
and Published by the Controller of Publications, Delhi-110054.

ALOK KUMAR Digitally signed by ALOK KUMAR Date: 2018.08.21 22:24:42 +05'30'